रूप में नहीं देखते हैं, हम यह देखते हैं कि हमारी नीतियां विद्रूप हो रही हैं जो राष्ट्र द्वारा पहले हासिल की गई उपलब्धियों को नष्ट कर रही हैं। हम इसका विरोध करेंगे क्योंकि यह हमारा लोकतांत्रिक अधिकार है और यह कार्य हमारा कर्त्तव्य है।

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर जो चर्चा सदन कर रहा था, वह समाप्त होने जा रही है। मैं सभी माननीय सदस्यों को चर्चा में भाग लेने के लिए धन्यवाद देता हूं। मुझे खेद है कि जब माननीय सदस्य बोल रहे थे तो कई बार सदन में मैं उपस्थित नहीं हो सका। राज्य सभा के अधिवेशन में भी कभी-कभी रहना जरूरी हो जाता है। मुझे वस्तुत: सचमुच में खेद है और मैं चाहूंगा कि इस तरह की घटना फिर से न दोहराई जाए। इसलिए संसद की कार्यवाही का इस तरह से आयोजन करना पड़ेगा कि राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर चर्चा लगातार होती रहे। चर्चा शुरू हो, फिर बीच में बंद हो जाए, फिर उसको पुन: आरंभ किया जाए, इस तरह से कठिनाई पैदा होती है और मैं समझता हूं कि सब दल मिलकर आपके नेतृत्व में ऐसा कार्यक्रम बनाएंगे जिससे कि एकतांता, निरंतरता बनी रहे और उपस्थित होने में ज्यादा कठिनाई न हो।

नेशनल डैमोक्रेटिक एलायंस की सरकार को लगभग तीन साल पूरे हो रहे हैं। हमने उन लोगों को जरूर निराश किया है जो यह आशा करते थे कि सरकार अब टूटी, सरकार अब टूटी। सरकार मजबूत है, देश में राजनैतिक स्थायित्व है। अब हम विकास के रास्ते पर तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। कुछ ऐसी उपलब्धियां हैं जिनसे सारी दुनिया परिचित है। हम उन दस देशों में हैं जो तेजी से आर्थिक प्रगति कर रहे हैं। हमारे यहां अन्न का भंडार है, हम स्वावलंबी हो गए हैं, किसान को इसका श्रेय है लेकिन एक बात जो ध्यान में आ रही है, मैं उसका उल्लेख करना चाहूंगा। हमने अन्न के उत्पादन पर बल दिया है लेकिन अन्न का उत्पादन बढ़ने के बाद उसे कहां सुरक्षित रखा जाएगा, भंडारण का कहां प्रबंध होगा, इसकी जितनी चिंता करनी चाहिए थी, नहीं की। अभी तक शायद हम स्केअरसिटी इकॉनोमी का विचार करते रहे हैं, अब प्लेंटी इकॉनोमी का विचार करने का वक्त आया है। कुछ मामलों में और विशेषकर खाद्य के मामले में हमारे सामने यही कठिनाई पैदा हो रही है लेकिन इस बात का प्रयास हो रहा है कि ये कमियां दूर की जाएं और इसके लिए नये बजट में ठोस कदम उठाए गए हैं। हम चाहते हैं कि किसान गेहूं और चावल की फसल से अपना ध्यान हटाकर अन्य फसलों की ओर लगाएं। इसके लिए कीमत की गारंटी देनी होगी। कठिनाई यह है कि हमारे यहां खेती का कोई पूर्व नियोजन नहीं है। अब यह प्रयास हो रहा है। मैंने पंजाब और हरियाणा में अपने भाषण के दौरान इस बात पर बल दिया है कि गेहूं-चावल के साथ-साथ तरकारी, फल बोये जाएं। तिलहन के उत्पादन की जरूरत है, हमें दालें चाहिए, लेकिन किसान को व्यवस्था बदलने में समय लगता है और इस कारण हमारी बहुत-सी कठिनाइयां पैदा हुई हैं। जो नगदी फसलें हैं, उनके दाम भी गिरे हैं, कीमतें कम हुई हैं। सरकार ऐसी फसलों को खरीदकर ऐसा प्रबंध करना चाहती है कि किसान घाटे में न रहे, लेकिन सरकार के हस्तक्षेप की भी सीमा है। हम प्रयास कर रहे हैं कि जो हमारे पास बचत का है, उदाहरण के लिए गेहूं व चावल हमारे पास पर्याप्त मात्रा में हैं, अब हम इसके विदेशों में भेजने की छूट दे रहे हैं। विदेशों में इसके लिए बाजार भी है। अच्छा दाम मिलेगा, इसकी आशा है। वैसे हम खेती के मामले में, खेती में लागत खर्च कम हो, इसका प्रयास कर रहे हैं। इसके लिए सबको मिल-बैठकर एक योजना बनाने की आवश्यकता है।

यह कहना ठीक नहीं है कि राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण में रोजगार का उल्लेख नहीं है। यह धारणा भी गलत है कि आर्थिक सुधारों के रास्ते पर अगर हम चलते गए, तो देश में बेरोजगारी बढ़ेगी। कुछ लोग जरूर प्रभावित होंगे और वह अपरिहार्य हैं, अनिवार्य है, लेकिन उससे भी ज्यादा मात्रा में रोजगार के अवसर सृजित होंगे, रोजगार के अवसर मिलेंगे। इस संबंध में राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण में जो कुछ कहा गया है, उसको मैं उद्धृत करना चाहता हूं–

[अनुवाद]

उदाहरण के लिए सिले-सिलाए वस्त्र, हल्के इंजीनियरी, खिलौने, हस्तकरघा, चमड़ा एवं सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सेवाओं जैसे अधिक श्रम साध्य उद्योगों में भारत अंतर्राष्ट्रीय बाजार में महत्वपूर्ण प्रतिस्पर्धी लाभ प्राप्त कर सकता है। सरकार ऐसे उद्योगों में बड़े पैमाने पर पूंजीनिवेश को प्रोत्साहन देगी तथा उनके तीव्र विकास के लिए आवश्यक आधारभूत ढांचे का निर्माण करेगी।

[हिन्दी]

मैं जानता हूं डब्ल्यूटीओ के कारण डब्ल्यूटीओ में हमारी भागीदारी के परिणामस्वरूप कुछ समस्याएं पैदा हो रही हैं, लेकिन उनका हल पलायन नहीं है। उनका हल पीछे कदम उठाने का तरीका नहीं है। चुनौती का सामना करना पड़ेगा और हम इस दृष्टि से पिछड़ न जाएं, इस बात को ध्यान में रखने की जरूरत है। एक तरीका पुराना था, उस तरीके को बदलने की आवश्यकता है। दुनिया के बाजार में टिक सकें, यह जरूरी है। इसके लिए गुणवत्ता पर जोर देना होगा, क्वालिटी पर जोर देना होगा, अगर हमने जोर दिया, हम डब्ल्यूटीओ के साथ जुड़े हुए हैं, विशेषकर छोटे उद्योगों और खेती के मामले में उनकी चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। कल मैं बंगलौर में था। वहां कर्नाटक के मुख्यमंत्री ने मुझे कहा है कि आप मुख्यमंत्रियों का एक सम्मेलन बुलाएं, जिसमें डब्ल्यूटीओ के कारण खेती में जो समस्याएं पैदा हो रही हैं, उन पर विचार किया जा सके और सब मिलकर कोई फैसला कर सकें। यही बात प्रात:काल आंध्र प्रदेश के

मुख्यमंत्री ने टेलीफोन पर दोहराई। मैं उनके सुझाव से सहमत हूं और हम इस संबंध में मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन का आयोजन करेंगे, जो डब्ल्यूटीओ से उत्पन्न होने वाली समस्याओं के बारे में चिंता कर सके और रास्त निकाल सके। यह जरूरी है कि हम एक्साइज ड्यूटी बढ़ाकर अपने उद्योगों की रक्षा करना चाहते हैं और अपनी फसलों की भी रक्षा करना चाहते हैं। लेकिन उसकी भी एक सीमा है और इसमें कोई कमी नहीं हुई है, जब आवश्यकता पड़ी है तो बढ़ाया गया है, जब जरूरत होगी तो और भी बढ़ाया जा सकता है।...*(व्यवधान)*

इसका एक स्थाई हल निकालने का प्रयास करना पड़ेगा। इसलिए मैं समझता हूं कि इस कार्य में एक आम सहमति बनाना बहुत आवश्यक है, लेकिन सहमति के रास्ते में अनेक रुकावटें हैं। हमारे कुछ मित्रों ने आर्थिक क्षेत्र में ऐसी नीतियां बनाने का तय कर रखा है, जो पुरानी नीतियां हैं, जिनका कुछ उपयोग नहीं है, वे उन्हीं के आधार पर, उन्हीं कसौटियों पर कसते हैं।...*(व्यवधान)* उससे सफलता नहीं मिलेगी। जहां तक हमारा सवाल है, हम प्रारंभ से कोटा परमिट राज के खिलाफ हैं। लाइसेंस से भ्रष्टाचार होता है, अभाव उत्पन्न होता है और अभी तक का अनुभव अच्छा नहीं है। लेकिन मैं देख रहा हूं कि हमारी इच्छा के बावजूद भी जितनी जल्दी और जितने गतिमान तरीके से कोटा परमिट राज कम होना चाहिए या समाप्त होना चाहिए, वह नहीं हो पा रहा है, क्योंकि व्यवस्था में ऐसे दांव-पेंच पड़ते हैं, ऐसी कुछ असमंजस की स्थितियां हैं कि कोई फैसला करने में और उस फैसले को कार्यान्वित करने में कठिनाई होती है। यह तभी संभव है जब सुधारों के सवाल पर एक मोटी आम राय हो। मैं यह नहीं कहता कि मतभेद नहीं रहेंगे, मतभेदों को हल करना चाहिए। मतभेदों को लेकर अपना आंदोलन भी चला सकते है।। जनता के पास जा सकते हैं। आखिर में तो जनता फैसला करेगी। लेकिन कुछ सवालों पर आम राय बनाना बहुत आवश्यक है और उनमें एक सवाल यह भी है, मैं आशा करता हूं कि कांग्रेस पार्टी ऐसे कदम नहीं उठाएगी जिसे बाद में शीर्षासन की संज्ञा दी जाए। ''बदले-बदले मेरे सरकार नजर आते हैं,''...*(व्यवधान)*

श्री श्रीप्रकाश जायसवाल (कानपुर) : देश की तबाही के आसार नजर आते हैं।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : जी हां, यह मैंने आपके लिए छोड़ दिया।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय, यह बहुत जरूरी है कि हम आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें। हमारे बीच में कुछ शल्य की भूमिका निभाते हैं, जो हैं तो पांडव पक्ष में, लेकिन बातें ऐसी कहते हैं कि जिनसे मनोबल टूटे, निराशा फैले। यह नीति ठीक नहीं है।...*(व्यवधान)* हम आलोचना का स्वागत करते हैं और आलोचना से हम सीखने के लिए भी तैयार हैं।...*(व्यवधान)* हमने पहले कभी राज-काज नहीं चलाया और उसकी गुत्थियां हम समझने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन नीयत पर शक नहीं होना चाहिए।...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल) : ये शल्य, पांडव कौन हैं, आप यह तो बता दीजिए।...*(व्यवधान)* यह हाउस के अंदर आ जाना चाहिए।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, देश में एनडीए के कारण विकेन्द्रीकरण, राज्यों के अधिकार और केंद्र को सत्ता से अलग, थोड़ा दूर रखने की जो स्थिति है, उसमें सुधार हुआ है। उसमें हम आगे बढ़े हैं। केंद्र और राज्यों के संबंध बड़े मधुर हैं। यद्यपि शासन अलग-अलग हैं, अलग-अलग पार्टियां राज कर रही हैं। हम कभी भेदभाव नहीं करते और अगर कोई बात होती है तो हम तत्काल उसे सुधारने का प्रयास करते हैं। हमारे पश्चिम बंगाल के मित्र इससे सहमत होंगे।...*(व्यवधान)*

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : आपने पूरा भेदभाव किया है। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं कुछ आंकड़े देख रहा था। पश्चिम बंगाल में जो सार्वजनिक उद्योग बंद किए गए हैं और बंद होने के कगार पर हैं उनकी संख्या कम नहीं है। जो समस्याएं हैं...*(व्यवधान)*

श्री बसुदेव आचार्य : आपने ही उन्हें बंद कर दिया है।... *(व्यवधान)*

श्री रूपचन्द पाल (हुगली) : हम नए बना रहे हैं।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप अच्छा कर रहे हैं। हम आपकी सफलता चाहते हैं क्योंकि आपकी सफलता संदिग्ध हो गई है।...*(व्यवधान)* आज ऐसी स्थिति है कि केंद्र में एक मिली-जुली सरकार है और प्रदेशों में अलग-अलग दलों की सरकारें हैं। यह अवसर मिलकर काम करने और लोकतंत्र को सबल बनाने का है। बहुदलीय लोकतंत्र और उसमें जो ढांचा आपको पसंद है, आप अपने राज्य में लागू करिए।

अब बिजली का सवाल है। बिजली एक संकट का क्षेत्र बन गया है। अभी मुख्यमंत्रियों के एक सम्मेलन का आयोजन किया गया था। उसमें एक राय बनी, आम राय बनी। सभी दलों के मुख्यमंत्री उस एक राय को बनाने में शामिल थे। सबने यह तय किया है कि बिजली के क्षेत्र में सुधार होना चाहिए और बिजली का उत्पादन बढ़ाएं लेकिन बिजली की अरबों रुपये की चोरी हो रही है।

श्री मुलायम सिंह यादव : सबसे ज्यादा दिल्ली में बिजली चोरी हो रही है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हर प्रदेश का बिजली पैदा करने का संयंत्र घाटे में है। हम बिजली का उत्पादन कर रहे हैं लेकिन उसका वितरण ठीक नहीं कर पा रहे हैं। अब यह एक पार्टी का

प्रश्न नहीं है, केंद्र और राज्यों के प्रश्न का सवाल नहीं है। हमें मिल-बैठकर इसका रास्ता निकालना पड़ेगा। आने वाला कठिन काल है। सचमुच राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में जो कहा, मैं उसे उद्धृत करना चाहता हूं। उन्होंने डाक्टर अम्बेडकर का हवाला दिया और उनका एक उद्धरण उपस्थित किया। मैं उनके शब्द पढ़कर सुनाना चाहता हूं :

[अनुवाद]

डा. बाबासाहब अम्बेडकर की चेतावनी हमारे आगे बढ़ने में सहायक होगी। संविधन के प्रारूप को प्रस्तुत करते हुए अत्यधिक उत्साह से कहा था, मैं उद्धृत करता हूं :

"26 जनवरी, 1950 को हम विरोधाभासी जीवन में प्रवेश कर रहे हैं। राजनीति में हमारे पास समानता होगी और सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में हमारे बीच असमानता होगी। यथाशीघ्र हमें इस विरोधाभास को दूर करना चाहिए।"

[हिन्दी]

बाबा साहेब अम्बेडकर ने उस समय चेतावनी दी थी, आज भी हमें भारत की दो तस्वीरें दिखाई दे रही हैं—एक भारत की तस्वीर वह है, जिस में भारत आगे बढ़ रहा है, चुनौतियों का सामना कर राह है, पैदावार बढ़ रही है। टैक्नॉलोजी और अन्य क्षेत्रों में स्थायित्व है। अब देखिए, टेलीफोन के क्षेत्र में कितनी प्रगति हुई है?...*(व्यवधान)*

श्री बसुदेव आचार्य : वहां सब गड़बड़ हो गया है।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अब टेलीफोन के लिए इंतजार नहीं करना पड़ता है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह ठीक नहीं है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अब कुकिंग गैस के लिए पार्लियामेंट के मैम्बर्स का कोई सहारा लिया जाए, इसकी आवश्यकता नहीं है। गैस के कनेक्शन मिल रहे हैं। संचार के क्षेत्र में जो प्रगति हुई, उसे मानना चाहिए। टेलीफोन कॉल्स सस्ते हो गए हैं। क्या आपको यह भी पसंद नहीं है? जहां कई क्षेत्रों में हमारी प्रगति हुई, वहां इनफर्मेशन टेक्नॉलोजी के क्षेत्र में हुई प्रगति को सारी दुनिया मान रही है। हमें किसी के सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं है। हमारा काम दुनिया में लोगों की सराहना प्राप्त कर रहा है। अगर विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है तो जो हमारे फंडामेंटल्स हैं, उनको मजबूत करने के कारण बढ़ी है। लेकिन कमियां भी हैं। ह्यूमन डेवलेपमेंट के हिसाब से जो आंकड़े आते हैं, अगर उन्हें देखा जाए तो हम लोग नीचे की पंक्ति में हैं जिसका कोई हिसाब नहीं है। लेकिन क्या हम एक पहलू देखें? क्या हम भारत की स्थिति को समग्रता में नहीं देखें, क्या दोनों पहलुओं को एक साथ नहीं रहना चाहिए? कमियां हैं, मगर हम इन कमियों को दूर करेंगे। इसमें संकल्प की आवश्यकता है और कुछ मामलों में यह संकल्प सब दलों में चाहिए। आज हम लोग सत्ता में हैं, कल कोई और होगा। हम लोग भी प्रतिपक्ष में थे और केवल एक सीमा तक विरोध करते थे। हमें उस दिन ताज्जुब हुआ जब सोमनाथ बाबू ने कहा कि ये न तो नेशनल हैं, न डेमोक्रेटिक हैं और न अलायंस हैं। बात खत्म हो गई, सब कुछ समाप्त कर दिया। न हम नेशनल हैं, न अलायंस हैं लेकिन वे इंटरनेशनल हैं...

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : यह सरकार सहयोगियों के लिए है। ...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मगर इंटरनेशनल दुनिया में इनकी पूछ नहीं है। वे किसके साथ अपने को जोड़ें, यह उनकी समझ में नहीं आ रहा है। दुनिया कितनी बदल गई है मगर हमारे बारे में फतवा दे दिया कि ये नेशनल नहीं हैं, डेमोक्रेटिक भी नहीं हैं। हम यहां चुनकर आए हैं तो क्या गैर-लोकतांत्रिक तरीके से आए हैं? हम लोगों के समर्थन से आए हैं।

[अनुवाद]

श्री सुदीप बंद्योपाध्याय (कलकत्ता, उत्तर-पश्चिम) : महोदय, आपको परेशान नहीं होना चाहिए। कम्युनिस्ट हमेशा से अंतर्राष्ट्रीय रहे हैं।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हमारा अलग-अलग दल से अलायंस है।

श्री सोमनाथ चटर्जी : हमारा लैफ्ट अलायंस है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हम लोग केवल सत्ता के लिए इकट्ठे नहीं हुए हैं। चुनाव के पहले हमारा गठबंधन बना था। हम लोग कॉमन एजेंडा के आधार पर लड़े, चुनाव के अखाड़े में उतरे और आपसे ज्यादा सीटें प्राप्त करने में सफल हुए हैं। अभी भी मौका है...

श्री सोमनाथ चटर्जी : उधर की बात पूछिए। आडवाणी जी ने कहा था

[अनुवाद]

विचारधारा का कोई प्रश्न नहीं है तथा नीति का कोई प्रश्न नहीं है। यह सत्ता में बने रहने का सवाल है। उन्होंने अनेक बार ऐसा कहा है। तब राजग की क्या विचारधारा है?...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह ठीक बात है। विचारधारा एक ही हो सकती है कि देश की स्वतंत्रता की सुरक्षा कैसे हो, देश का जन-कल्याण किस तरह से हो? इज्म से काम नहीं चलेगा। इज्म सब बाजिम हो गया, यह पुरानी कहावत है। विचारधारा एक है। यह विचारधारा है कि हमारा व्यवहार ठीक हो, यह विचारधारा है कि हम करप्शन से लड़ें, विचारधारा है कि हम लोगों को अच्छा शासन दें लेकिन मतांतर नहीं कि हम ऐसी बातों पर संघर्ष खड़ा करें जो केवल बौद्धिक दृष्टि से समर्थ न हो। इससे तो काम नहीं बनेगा। सब प्रदेशों में अलग-अलग दल सत्ता में हैं लेकिन वे विकेन्द्रीयकरण के आधार पर शासन चला रहे हैं। शिकायतें भी होती हैं और शिकायतें जरा जोर से सुनी जाती हैं और जो सहयोग मिलता है, उसकी ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। आपको भी अब इसी दिशा में आगे बढ़ना पड़ेगा। 'न अन्यान्य पंथ विद्यते' कोई और रास्ता नहीं रहा। कांग्रेस पार्टी ने फैसला किया था कि वे किसी के साथ गठबंधन नहीं करेंगे...

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : आप उन्हें पर्याप्त सुविधाएं दे रहे हैं इसलिए सरकार में बने हुए हैं। हम यह जानते हैं।...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : कांग्रेस ने फैसला किया था कि वे किसी के साथ गठबंधन नहीं करेंगे। बाद में यह फैसला बदलना पड़ा और गठबंधन भी किया तो बिहार जैसा किया। उसके पीछे कौन-सा सिद्धांत है? हम एक हुए हैं तो देश की एकता के लिए, स्थायित्व के लिए, एक अच्छे शासन के लिए। हमारे आचरण में पारदर्शिता है और इसीलिए कोई विकल्प तैयार नहीं हो रहा है...

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : आप अपने आपको प्रमाण-पत्र दे रहे हैं।...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : लोकतंत्र में यह करना पड़ता है। आज आत्म-प्रचार के बिना लोकतंत्र नहीं चलता है। अगर आप अच्छे को अच्छा नहीं कहेंगे तो कम से कम हम तो अपने अच्छे को जरूर अच्छा कहेंगे लेकिन गुण और आचरण के आधार पर सही कसौटी वही है।

अपराह्न 1.00 बजे

हमने प्रयास किया है कि जम्मू-कश्मीर में शांति प्रक्रिया को बढ़ावा दिया जाए। जम्मू-कश्मीर का मामला एक ऐसा मामला है, बहुत नाजुक मामला है, जो वर्षों से चल रहा है, आतंकवाद के कारण पीड़ित है, त्रस्त है। पड़ौसी देश आतंकवादी गतिविधियां बढ़ा रहा है, उनमें सहायक है। लेकिन जब सीजफायर की बात हुई और रमजान के महीने में सीजफायर का फैसला किया गया तो उसका देश में, देश के भीतर, जम्मू-कश्मीर में और दुनिया में व्यापक स्वागत हुआ। भारत शांति चाहता है, यह दुनिया वालों ने माना और कश्मीर के सवाल पर भी अब अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि में परिवर्तन हो रहा है, श्री कोफी अन्नान का वक्तव्य इसका संकेत है।

जो लाहौर यात्रा का मजाक उड़ाते थे, उन्हें जरा अपने गिरेबान में मुंह डालकर देखना चाहिए। कूटनीति आवश्यक है, लेकिन उसके साथ जनता को विश्वास में लेकर कदम बढ़ाना भी बहुत जरूरी है। जम्मू-कश्मीर में बातचीत करने में जरूर विलंब हुआ है। लेकिन उसके कारणों में मैं नहीं जाना चाहता, उसके लिए सरकार उत्तरदायी नहीं है, उसके और भी कारण हैं, वक्त आने पर उनका उद्घाटन किया जाएगा। लेकिन हम जल्दी बातचीत शुरू करने वाले हैं, सब दलों से बातचीत करने वाले हैं और कश्मीर की समस्या का समाधान निकालने का प्रयास करेंगे, इस पर कोई मतभेद नहीं है और यह शिकायत बेजा है कि हम विश्वास में नहीं लेते हैं। कितना विश्वास में ले, किस तरह से विश्वास में ले। बैठकें होती हैं, कोई कदम, महत्वपूर्ण कदम, निर्णायक कदम हम बिना सलाह-मशविरे के नहीं उठाते।...*(व्यवधान)*

कुंवर अखिलेश सिंह (महाराजगंज, उ.प्र.) : राज्य सभा में तो आप कांग्रेस को मना ही लेते हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : लेकिन जिम्मेदारी सबकी है और इस जिम्मेदारी को हम सब मिलकर पूरा करें, इस बात की आवश्यकता है। बातचीत शुरू होगी, रास्ता निकालने का प्रयास किया जाएगा। पाकिस्तान को अपना रवैया बदलना चाहिए। भारत के विरुद्ध एक बद्धमूल अमैत्री का भाव है, उसमें परिवर्तन की आवश्यकता है, इसके लिए पाकिस्तान प्रयास करे। यह हमारी कामना है। उन्होंने गुजरात की त्रासदी के समय मदद की, हमने उन्हें धन्यवाद दिया। भगवान न करे अगर पाकिस्तान भी कभी किसी मुसीबत में फंसा तो हम भी मदद देने में पीछे नहीं रहेंगे। यह मानवता से ऊपर का सवाल है। मुलायम सिंह जी तो इस सवाल पर बहुत ही भावुक होकर कल बोले थे—उन्होंने कहा कि हम छः गुना नहीं आठ गुना मदद करेंगे, पैसा होना चाहिए। उन्हें सुझाव मेरा मान्य है और मुझे उनकी बात मान्य है। हम एक-दूसरे के निकट आने का प्रयास करें।...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : प्रधान मंत्री जी आप हमारी चार बातें मान लीजिए—एक, अयोध्या में मंदिर बनाने के विवाद को खत्म कीजिए; दो, धारा 370 की बात बंद कीजिए; तीन, अल्पसंख्यकों के

बारे में विशेषकर मुसलमानों के बारे में राय बदलिए; और चार, आप आर.एस.एस. से संबंध-विच्छेद करिए। हमारी और आपकी नजदीकी आ जाएगी।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं भारत और पाकिस्तान की बात कह रहा था। मुलायम सिंह जी से हमारी पट नहीं सकती। अब मुलायम सिंह जी की जहां जिससे पट जाए, हम नहीं कह सकते क्या होगा।

श्री मुलायम सिंह यादव : वह तो मजबूरी है। देश की खातिर मजबूरी है। वरना देश बिक जाएगा, देश को बेचा जाएगा। घाटे के संस्थानों को आप बेच रहे हैं, उन्हें कोई ले नहीं रहा है और जो मुनाफे के सारे संस्थान बेच रहे हैं उनके लिए हम देश के हित में ऐसा करने के लिए मजबूर हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इस देश को खरीदने वाला कोई माई का लाल पैदा नहीं हुआ।

श्री पवन कुमार बंसल (चंडीगढ़) : बेचने वाले तो पैदा हो गए हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : बेचने वाले अगर पैदा हो गए हैं तो देश की जनता उन बेचने वालों को उखाड़कर फेंक देगी। उदाहरण सामने है।...*(व्यवधान)* बेचने और खरीदने की बातें नहीं होनी चाहिए। आखिर देशभक्ति पर संदेह नहीं किया जा सकता। न हमने कभी किया है, न हम किसी को करने की इजाजत देंगे।...*(व्यवधान)*

श्री पवन कुमार बंसल : यह नहीं कह रहे हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : फिर क्या कह रहे हैं?...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : देश की संपत्ति बेची जा रही है। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अब हमारी मुश्किल यह है कि हम मुलायम सिंह जी की हर बात से सहमत नहीं हो सकते। उन्होंने कहा कि अफगानिस्तान में जो कुछ हो रहा है, बौद्ध मूर्तियों को गिराने का काम किया जा रहा है, वह बंद हो सकता था अगर भारत शक्तिशाली होता।

श्री मुलायम सिंह यादव : यह सही है। यह सही है कि आज अमेरिका के आस-पास किसी की हिम्मत नहीं है कि कोई कुछ ऐसा काम करे। अगर हमारा देश मजबूत होता तो इस तरह अफगानिस्तान की हिम्मत नहीं होती।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मुलायम सिंह जी रक्षा मंत्री रह चुके हैं। ऐसी बात मत कहिए जो रक्षा मंत्री को शोभा नहीं देती।

श्री मुलायम सिंह यादव : हमला करने की आवश्यकता नहीं होती, देश का इकबाल ही काम करता है। आज देश का इकबाल नहीं है आस-पास के देशों में। यह हमारी नीति है। हम यह नहीं चाहते कि हमला कर देते लेकिन हिन्दुस्तान का इकबाल आज इतना होना चाहिए कि जिससे दूसरे की हिम्मत नहीं पड़े।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं इस विवाद में नहीं पड़ना चाहता। अफगानिस्तान में जो कुछ हुआ है, उसकी सारी दुनिया ने निन्दा की है, वह बर्बरता का काम है, लेकिन दुनिया की भी एक सीमा है और ऐसा समझने का कोई कारण नहीं है कि अगर हममें शक्ति होती तो हम वहां विध्वंस रोक देते। यह नहीं हो सकता था। लेकिन ऐसे तत्व बढ़ने न पाएं, ऐसे तत्व पनपने न पाएं, ऐसे तत्व दुनिया में हावी न हो पाएं, इसकी चिंता करने की जरूरत है और इसलिए फंडामेन्टलिज्म के खिलाफ हम एक विश्व जनमत बना रहे हैं, आतंकवाद के खिलाफ भी हम चाहते हैं कि एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता हो और यह तभी संभव है जबकि समस्याओं पर गहराई से अध्यन किया जाए।...*(व्यवधान)*

श्री बसुदेव आचार्य : बाबरी मस्जिद को क्यों गिराया गया? उसकी निंदा कीजिए।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : डा. रघुवंश प्रसाद सिंह, यह क्या हो रहा है? कृपया आप बैठ जाइए। श्री रामदास आठवले यदि आपकी जवाब में रुचि नहीं है तो कृपया बाहर चले जाएं। यह क्या है?

[हिन्दी]

आठवले जी, आप बार-बार खड़े होकर ऑब्स्ट्रक्ट कर रहे हैं, ये आप क्या कर रहे हैं?

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया यह समझें कि वे सदन के नेता भी हैं।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात कहना चाहूंगा कि सदन में मामले उठाने से पहले और अगर उन मामलों का आधार समाचार-पत्र या पत्रिकाएं हैं, तो थोड़ा-सा उनकी सत्यता के बारे में, उनके औचित्य के बारे में जांच-पड़ताल कर लेनी चाहिए। आखिर संसद के सदस्यों पर बड़ी जिम्मेदारी है। समाचार-पत्रों को

एक अलग राजनीति है। समाचार-पत्रों के अलग ढंग के खेल हैं और उनके आप भी शिकार होते हैं, कभी हम भी शिकार होते हैं। लेकिन अनर्गल आरोप लगाना कोई अर्थ नहीं रखता है। पी.एम.ओ. की चर्चा हो रही है। क्या पीएमओ हमने बनाया है? पीएमओ के सृजनकर्ता हम नहीं हैं। लालबहादुर शास्त्री जी के जमाने से पीएमओ काम कर रहा है। मिनिस्टर्स के ग्रुप बनाए जाते हैं, इसकी चर्चा हो रही है। इस देश में मंत्रिमंडल जितने सहयोग से, जितने उन्मुक्त वातावरण में काम कर रहा है, शायद पहले कभी नहीं करता था।

अध्यक्ष महोदय, हर विषय पर चर्चा होती है। चर्चा से पहले कोई फैसला नहीं सुनाया जाता और अगर किसी प्रश्न पर एक राय नहीं बनती है, तो उसे कुछ मंत्रियों के विचार के लिए दिया जाता है, चर्चा के लिए दिया जाता है। यह है 'ग्रुप आफ मिनिस्टर्स' की कहानी। उसके बाद फिर ग्रुप आफ मिनिस्टर्स की रिपोर्ट मंत्रिमंडल के सामने आती है। मंत्रिमंडल को बाई-पास करने का कोई सवाल नहीं है। अलग-अलग दलों के प्रतिनिधि हैं, वे फैसला करते हैं, चर्चा करते हैं, खुले तौर पर चर्चा करते हैं। चर्चा पर कोई प्रतिबंध नहीं है और अंत में निर्णय कैबीनेट करती है। अंत में निर्णय मंत्रिमंडल करता है। ऐसे आरोपों से भारत की प्रतिष्ठा बढ़ती नहीं है बल्कि हमारे मन में और भी खिन्नता पैदा होती है, लेकिन मैं आशा करता हूं कि कोई भी आरोप लगे, तो उसके बारे में थोड़ी सी छानबीन जरूरी है।...*(व्यवधान)*

डा. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली) : जे.पी.सी. से जांच कराइए। हमारा आरोप है। जे.पी.सी. जांच कराइए।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत गंभीर मामला उठा रहा हूं और शोर-शराबे से बात नहीं बनेगी। इस पर आप ठंडे दिल से विचार करिए। इस पर चर्चा करने से बात नहीं बनेगी। एक साप्ताहिक पत्रिका को बड़े पैमाने पर उद्धृत किया गया। उस पत्रिका को मैं उद्धृत करना चाहता हूं, यह एडीटोरियल का अंतिम हिस्सा है–

[अनुवाद]

"भारतीय लोकतंत्र की त्रासदी वर्तमान शासक नहीं है। आज के प्रधान मंत्री कार्यालय और राजीव जी के अधीन प्रधान मंत्री कार्यालय में से चयन बेहतर विकल्प कौन सा है? सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि आज विपक्ष का नेतृत्व सोनिया गांधी, सोमनाथ चटर्जी और मुलायम सिंह यादव द्वारा किया जा रहा है। मुझे आश्चर्य है कि इस देश के लोगों ने कौन सा पाप किया है कि इस तरह के व्यक्ति उनके नेता हैं।"

[हिन्दी]

अब अगर इस लेखन से भटककर आप मामला सदन में उठाएंगे और यह आशा करेंगे कि...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : महोदय, यदि माननीय प्रधान मंत्री जी अपनी बात कह चुके हों, तो मैं इसे स्पष्ट करूं। मैंने यह सुस्पष्ट कर दिया था...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री सोमनाथ चटर्जी, वे नहीं मान रहे हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : स्पष्टत: उन्होंने मेरे भाषण का उल्लेख किया है। कृपया मुझे आधा मिनट का समय दीजिए। मैंने यह सुस्पष्ट कर दिया था।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री सोमनाथ चटर्जी जी, वे सहमत नहीं हो रहे हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : कृपया मुझे अनुमति दीजिए। मैंने यह सुस्पष्ट कर दिया था। प्रधान मंत्री जी तब आप यहां नहीं थे...*(व्यवधान)* दुर्भाग्यवश आप यहां नहीं थे। मैं आपका वक्तव्य स्वीकार करता हूं कि आप अन्यत्र संसदीय कार्य में व्यस्त थे। मैंने कहा था कि मैं इसे सभा के समक्ष लाया था क्योंकि मैं माननीय प्रधान मंत्री जी से स्पष्टीकरण चाहता था। एक वरिष्ठ अधिकारी ने ये आरोप लगाए थे जिसका खंडन नहीं किया गया। गंभीर आरोप लगाए गए थे। सरकार ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। इसलिए पर्याप्त सोच-विचार करने के बाद मैं इसे सभा के समक्ष लाया हूं। मैं भारत के माननीय प्रधान मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि वस्तुस्थिति क्या है। प्रधान मंत्री जी आप उस सचिव के बारे में क्या कहते हैं जो कहता है :

"चूंकि मैंने एक व्यवसाय समूह के विरुद्ध निश्चित निर्णयों पर आपत्ति की थी, इसलिए अगले दिन मेरा स्थानांतरण कर दिया गया।"

इसलिए जो कुछ आप कहना चाहते हैं कृपया कहें। वह मेरा कथन नहीं है...*(व्यवधान)* वे अब कहते हैं कि वे संपादकीय उद्धृत कर रहे हैं क्योंकि उस समय मैंने इसे उठाया था। यह अत्यधिक अनुचित है।...*(व्यवधान)*

श्री खारबेल स्वाइं (बालासोर) : महोदय, उन्होंने वह आरोप उसी दिन लगाया। उन्होंने वही कहा था।...*(व्यवधान)* बिना किसी शंका के मैं कहता हूं कि उन्होंने वे आरोप लगाए थे। उन्होंने इसे पत्रिका में पढ़ा था। वे आरोप उन्होंने लगाए थे।...*(व्यवधान)* मैंने इस पर आपत्ति की थी। महोदय, उस दिन आप भी उपस्थित थे। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : डा. रघुवंश प्रसाद सिंह जी, अब बस कीजिए। आप संपूर्ण सभा में विघ्न उत्पन्न कर रहे हैं। जब माननीय प्रधान मंत्री जी जवाब दे रहे हैं, तो आप इस प्रकार की टिप्पणी कर रहे हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह उचित तरीका नहीं है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

डा. रघुवंश प्रसाद सिंह : अध्यक्ष महोदय, इंडिया टू डे पत्रिका में लिखा है–"खेती करे सो मरे" आपके राज में जो खेती करे सो मरे।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : इस वाद-विवाद में सभा के 12 घंटे और 27 मिनट लगे हैं। इस वाद-विवाद में 34 वक्ताओं ने भाग लिया है। फिर भी आप प्रधान मंत्री जी का विरोध कर रहे हैं।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मुझे खेद है कि...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण इस सभा में एक नया दृष्टांत कायम कर रहे हैं। मै। शुरू से ही माननीय सदस्यगणों का अवलोकन कर रहा हूं। जब सदन का नेता जवाब दे रहा है, यह किस प्रकार का विरोध है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : ऑनरेबल प्राइम मिनिस्टर यह लंच का समय है। सबको भूख लग रही है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : भूख नहीं लग रही है, गुस्सा आ रहा है। अध्यक्ष जी, जो रिपोर्ट छपी है। उसमें किसी सेक्रेटरी का नाम नहीं है।...*(व्यवधान)*

श्री रूपचन्द पाल : नाम है। रिपोर्ट पढ़ लीजिए।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह उचित नहीं है, कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : केवल इसी बार नहीं, बल्कि हर बार आप ऐसा ही करते हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : जब सदन के नेता और विपक्ष के नेता बोल रहे हैं तब आपको कुछ धैर्य से काम लेना चाहिए। यह क्या है?

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : जनरल तरह के एलीगेशन्स लगाए गए हैं और इस तरह के एलीगेशन्स को गंभीरता से नहीं लिया जा सकता।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : परंतु श्री जयपाल रेड्डी जी, वे सहमत नहीं हो रहे हैं। यह क्या है?

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : नहीं, आप बैठ जाइए। जयपाल रेड्डी जी, आप बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आप सभी सभा के वरिष्ठ सदस्य हैं।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैंने सिर्फ इतना कहा है कि संसद सदस्यों से यह आशा की जाती है कि जो मीडिया में छपता है, उसको सदन में विचार का विषय बनाने से पहले उसके औचित्य के बारे में जानने का प्रयास करना चाहिए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : जब सदन का नेता जवाब दे रहा हो तो क्या सदन में आचरण का यही तरीका है? आप इस सभा में एक नया दृष्टांत कायम कर रहे हैं। यह क्या है?

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री विजय गोयल (चांदनी चौक) : इस प्रकार से यदि आप सदन के नेता को बोलने से रोकने का प्रयास करेंगे, तो क्या आपके लीडर भाषण कर लेंगे?...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रधान मंत्री जी के भाषण को छोड़कर कार्यवाही वृतांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाए।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, श्रीमती सोनिया गांधी ने अयोध्या से संबंधित मुकदमे की चर्चा की थी और उन्होंने कहा था कि सरकार क्या कर रही है। मैं सरकार के दृष्टिकोण को स्पष्ट करना चाहता हूं।

[अनुवाद]

जब से हमारी सरकार ने पदभार ग्रहण किया है, वह कानून की उचित प्रक्रिया के प्रति समर्पित रही है। न तो इसने विधिक प्रक्रिया में कभी हस्तक्षेप किया है और न ही कभी ऐसा करेगी।

पहले के विपरीत हमारी सरकार ने सरकार से संबद्ध किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के विरुद्ध कभी कोई आपराधिक मामला वापस नहीं लिया है। यहां तक कि अयोध्या मामले में सीबीआई के लिए बहस करने वाले अभियोजन वकील भी वे ही हैं जिनकी नियुक्ति तीन वर्ष पूर्व मेरी सरकार के पदभार ग्रहण करने से पहले की गई थी। सीबीआई एक स्वतंत्र अन्वेषक एजेंसी है। सरकार सीबीआई को कोई दिशा-निर्देश जारी नहीं करती है और न ही किसी कानून के अंतर्गत ऐसा कोई निदेश जारी कर सकती है। लखनऊ में विशेष न्यायाधीश के समक्ष सीबीआई की स्थिति यह है कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय के बावजूद अयोध्या वाद में विभिन्न व्यक्तियों के विरुद्ध इसका आरोप-पत्र बरकरार रखा जा रहा है। यह मामला विशेष न्यायाधीश के समक्ष विचाराधीन है। इसलिए मैं इस पर कोई और टिप्पणी नहीं करना चाहता।

[हिन्दी]

कानून अपना काम करेगा, इसके बारे में किसी के मन में संदेह नहीं होना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, मैं अपने भाषण को समाप्ति की ओर ले जाना चाहता हूं। राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में इस बात का प्रयास हुआ है कि विस्तार से देश की जो परिस्थिति है और जो समस्याएं हैं, उनको उपस्थित किया जाए। इसलिए भाषण एक संदर्भ पुस्तिका की तरह से हो सकता है। हमारे यहां राष्ट्रपति की स्थिति अलग है। और अवसरों पर राष्ट्रपति जी जो कुछ बोलते हैं उसमें और जो संसद के प्रारंभ में बोल जाता है उसमें अंतर है। इसलिए कभी-कभी ऐसा लगता है कि यह जो भाषण हो रहा है, वह बड़ा रूखा है या जरूरत से ज्यादा लंबा हो गया है। अगर सब चीजों का समावेश करना है तो इससे बचने का और कोई रास्ता नहीं है। हम राष्ट्रपति जी के आभारी हैं। उन्हें धन्यवाद देते हैं।

श्रीमती सोनिया गांधी जी ने न्यूक्लियर पालिसी का मामला उठाया था। हम चाहते हैं कि न्यूक्लियर पालिसी पर बातचीत हो और आपस में बैठकर बातचीत हो। न्यूक्लियर पालिसी किसी एक पार्टी की पालिसी नहीं होगी, वह सारे देश की पालिसी होगी। आने वाली सरकारें भी इस नीति से बंधी हुई होंगी। उस बारे में किसी के मन में कोई मतभेद, कोई दुराव नहीं होना चाहिए। मैं सब सदस्यों का आभारी हूं जिन्होंने...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री सुदीप बंद्योपाध्याय (कलकत्ता, उत्तर-पश्चिम) : महोदय, भारतीय संसद में आज आप हरभजन सिंह हैं। वे घबरा गए हैं।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं। नमस्कार।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद प्रस्ताव के लिए माननीय सदस्यों ने कई संशोधन प्रस्तुत किए हैं। क्या मैं सभा के मतदान के लिए सभी संशोधन एक साथ रखूं या कोई माननीय सदस्य, कोई विशेष संशोधन अलग से रखना चाहता है?

अब मैं सभी संशोधन सभा के मतदान के लिए रखूंगा।

सभी संशोधन रखे गए व अस्वीकृत हुए।

अध्यक्ष महोदय : अब मैं सभा के मतदान के लिए मुख्य प्रस्ताव रखूंगा।

प्रश्न यह है :

"कि राष्ट्रपति की सेवा में निम्नलिखित शब्दों में एक समावेदन प्रस्तुत किया जाए :

"कि इस सत्र में समवेत लोक सभा के सदस्य राष्ट्रपति के उस अभिभाषण के लिए जो उन्होंने 19 फरवरी, 2001 को एक साथ समवेत संसद की दोनों सभाओं के समक्ष देने की कृपा की है, उनके अत्यंत आभारी हैं।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

*कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।